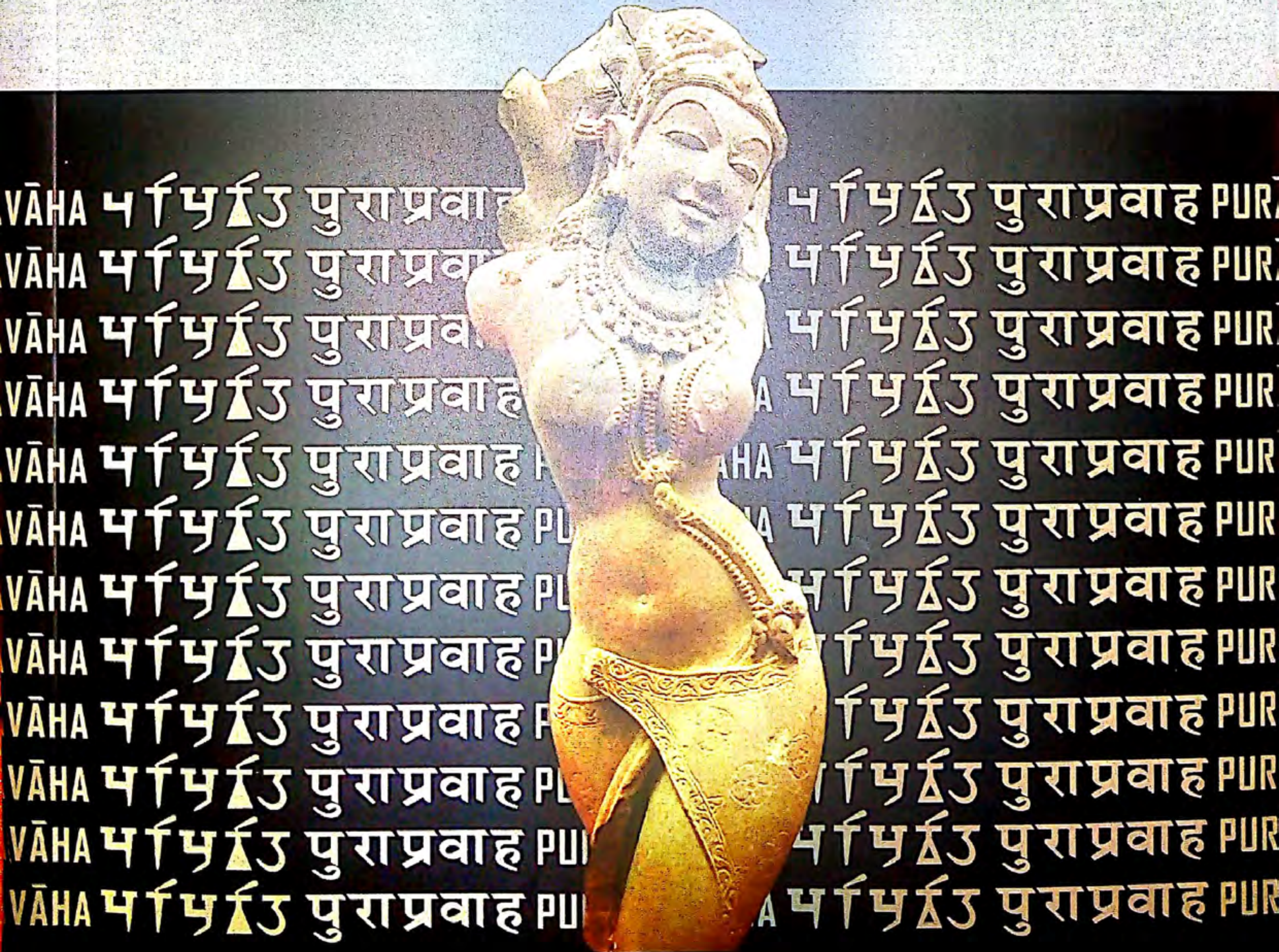
पुराप्रवाह

क्रमांक 4 2019



भारतीय पुरातत्व परिषद्, नई दिल्ली

Scanned by CamScanner

अनुक्रमणिका

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

पूर्व-मध्यकालीन मिथिला की सूर्य प्रतिमाएँ

शिव कुमार मिश्र*

मिथिला क्षेत्र सांस्कृतिक एवं प्राकृतिक संपदाओं से परिपूर्ण होते हुए भी पुरातात्त्विक दृष्टि से हमेशा उपेक्षित रहा है। फिर भी इस क्षेत्र में सत्येन्द्र कुमार झा, प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन', भोगेन्द्र झा, सुशांत कुमार आदि के द्वारा प्रशंसनीय कार्य हुए हैं। विजयकान्त मिश्र (1978) द्वारा मिथिला के विषय पर जो सूचनाएँ दी गई थीं वह इस क्षेत्र के लिए प्रायः प्रथम प्रयास था।

जहाँ तक मिथिला में सूर्योपासना का प्रश्न है इस संदर्भ में एक आलेख बी० झा एवं अनिल कुमार चौधरी (2006: 98) का प्रकाशित हुआ है लेकिन इससे जिज्ञासा शांत नहीं होती। प्रस्तुत आलेख में वर्तमान समय तक प्राप्त पुरावशेषों के आधार पर मिथिला में सूर्योपासना की परंपरा पर प्रकाश डाला गया है।

मिथिला में सूर्योपासना का प्रमाण आरंभिक समय से ही मिलता है। पौराणिक कथानुसार याज्ञवल्क्य को यजुर्वेद का दर्शन सूर्योपासना से प्राप्त हुआ था (शतपथ ब्राह्मण 14/9/5/33)। सूर्य के प्रति आर्यों की स्वाभाविक आस्था थी जो अपने प्रकाश और तेज से समस्त जगत एवं जीवों को आलोकित करता था। वह सात हरित अश्व के रथ पर बैठकर गतिमान होता था। उसे द्यौस, मित्र और वरुण का चक्षु माना जाता था। उसकी उपासना पाँच रूपों यथा सूर्य, सविता, मित्र, पूषन एवं विष्णु के रूप में की जाती थी। सूर्य, जिसका पूजन प्राकृतिक और स्वाभाविक रूप से होता था जो दिन में दिखाई पड़ता था और अपने प्रभाव से मार्गदर्शन करता था। सविता, जो सूर्य की प्रेरक शक्ति को अभिव्यक्त करता था तथा जिसकी प्रार्थना में गायत्री मंत्र का उच्चारण किया जाता था। वह स्वर्णिम देवता था। उसके नेत्र, हाथ, जिह्वा एवं भुजाएँ स्वर्णिम थीं। सविता में सूर्य का दिन में दिखाई पड़ने वाला रूप और रात्रि में न दिखाई देने वाला रूप दोनों थे। मित्र, सूर्य का ही एक अंश था, जिसकी आराधना ईरान में अधिक की जाती थी। वहाँ वह वरुण के साथ वर्णित किया जाता था। पूषन्, सूर्य की ही शक्ति का परिचायक था जो औषधि और वनस्पति जगत के संवर्द्धन में योगदान करता था। विष्णु, जो ऋग्वेद में आकाश में विचरण करने वाला सूर्य का रूप था (ऋग्वेद 3/62/10)। सूर्य को अग्निदेव का रूप भी कहा गया है (ऋग्वेद 3/12)। सूर्य की महत्ता इतनी बढ़ी हुई थी कि सोमरस की उत्पत्ति भी सूर्य एवं विद्युत से मानी गई है (ऋग्वेद 9/93/1)। वस्तुतः वह सूर्य के साथ प्रकाशित

* बिहार रिसर्च सोसाइटी, पटना संग्रहालय, पटना

Scanned by CamScanner

होकर अंधकार का विनाश करता था (ऋग्वेद 9/1/6; 9/9/9; 8/108/12)। ऋग्वेद में सोम को सूर्या का पति भी कहा गया है। सोमरस का पान करने वाले एक आर्य का यह कहना था हमने सोमरस का पान किया है हम अमर हो गए हैं, हम प्रकाशमान हो गए हैं, हमने देवताओं को पहचान लिया है (ऋग्वेद 8/48/3)। सूर्य का संबंध चंद्रमा से ऋग्वैदिककालीन है। उसके सूर्यमासा और सूर्याचंद्रमासा के रूप में विवृत किया गया है जो वरुण के दो भ्राजमान नैनों के अभिव्यंजक थे। अथर्ववेद में चंद्रमा की उत्पत्ति सूर्य से मानी गई है (अथर्ववेद 9/5)। कौषीतकि ब्राह्मण से विदित होता है कि प्रजापति के तप से अग्नि, वायु, आदित्य, चंद्रमा और उषा नामक पाँच सत्व उत्पन्न हुए थे (कौषीतकि ब्राह्मण 6/1)। यज्ञकाल में चंद्रमा की उपयोगिता बढ़ गई थी तथा सूर्य की जीवनी शक्ति के साथ चंद्रमा भी संबद्ध हो गया था।

सूर्य की पत्नी तथा प्रेयसी उषा को कहा गया है जो द्यौस की पुत्री थी। उषा प्रातः कालीन देवी के रूप में अत्यंत मनोहारिणी कल्पना के साथ ऋग्वेद में विवृत की गई है। सूर्योदय के पहले ही वेला उषा के नाम से वर्णित हैं उसका वर्णन अत्यंत ही रमणीय एवं आकर्षक रूप में किया गया है। वह प्राची क्षितिज में रजनी के घोर अंधकार से सिले वस्त्र को फेंककर जब उदय होती है तब वह चमकीले रागरंजित वस्त्रों से सज्जित होकर आलोकित होती है। उसके लिए एक मंत्र में कहा गया है, हे! देवकन्ये उषा, हमारे लिए धन सहित प्रभात करो। विभाकारी उषाकाल देवता प्रभूत अन्न देकर प्रभात करो। देवी दानशील होकर पशुरूप धन के साथ प्रभात करो (ऋग्वेद 1/48/1)। उसे लावण्यमयी रमणी के रूप में वर्णित करके सूर्य द्वारा उसका पीछा किया जाना दर्शित किया गया है (ऋग्वेद 1/48/1)। सूर्य की माता अदिति को कहा गया है। सूर्य सात घोड़ों पर सवार होकर जगत को प्रकाशित करते थे (ऋग्वेद 8/61/16)।

यद्यपि सूर्य बाद के समय में भी विश्व को यथावत प्रकाशित करता रहा लेकिन महत्ता महाभारत काल में पहले से कम हो गई। इसी प्रकार अग्नि की भी शक्ति क्षीण हो गई थी। सूर्य पुत्र धर्म वैवस्वत का नए देवता के रूप में उदय हुआ था जो कामदेवता का जनक था।

मिथिला में पंचदेवता की महत्ता पुराणों के समय से बढ़ी है। अनेक वैदिक देवी-देवताओं का इस समय उल्लेख मिलता है। पंचदेवों में विष्णु, शिव, शक्ति, गणेश और सूर्य सम्मिलित हुए। परवर्ती काल में आकर ये पाँचों वैदिक देवता प्रधान हो गए थे। इस युग में लक्ष्मी, दुर्गा आदि विभिन्न देवियों की भी प्रतिष्ठा हो गई थी। इन पंचदेवों का स्वतंत्र संप्रदाय विकसित हुआ यथा-विष्णु से वैष्णव, शिव से शैव, शक्ति से शाक्त और सूर्य से सौर संप्रदाय का उत्कर्ष हुआ, जिनके अलग दर्शन और पूजन पद्धतियाँ थीं। कुषाण युग में सूर्य की मूर्तियाँ भी बननी शुरू हो गई थी। नंदनगढ़ से प्राप्त हुविष्क के एक रजत मुद्रा पर सूर्य देवता का चित्र दिखता है। इसका समय पहली शताब्दी ईसा पूर्व माना गया है (*एनुअल रिपोर्ट* 1935-36: 64)।

विगत कुछ दिनों में प्राचीन तालाब की उड़ाही, सड़क निर्माण तथा खेतों में मिट्टी कटाई के क्रम में अनेकानेक प्रतिमाएँ प्राप्त हुई हैं। इनमें अधिकतर सूर्य की प्रतिमाएँ मिली हैं। इनकी मूर्ति निर्माण कला भी भिन्न-भिन्न प्रकार की है। इन प्रतिमाओं में अधिकतर कर्णाटकाल की प्रतीत होती हैं तो कुछ पालकालीन। इन प्रतिमाओं पर मिथिला की अपनी स्थानीय कला की स्पष्ट छाप दिखती है।

सूर्य की एक प्रतिमा मधुबनी जिले के अंधराठाढ़ी के सरखड़ा पोखर से मिट्टी काटने के क्रम में मिली है। सूर्य की यह प्रतिमा अत्यंत ही सुंदर एवं अलंकृत हैं (चित्र 1) जिसकी लंबाई 71 सें०मी० चौड़ाई 32 सें०मी० एवं मोटाई 9 सें०मी० है (मिश्र 2015: 3-4)। यह प्रतिमा ग्यारहवीं-बारहवीं शताब्दी की है। सूर्य के सारथी अरुण सात घोड़े से जुते हुए रथ को संभाले हुए हैं। उषा-प्रत्यूषा धनुष-वाण को लेकर अंधकार को नष्ट करने को उद्यत हैं। सूर्य की दाहिनी ओर दंड अपनी हाथ में दंड तथा बाईं ओर पिंगल हाथ में

Scanned by CamScanner

कलम–दवात लेकर खड़े दिख रहे हैं। प्रतिमा में तीन स्त्री पात्र सूर्य के दोनों तरफ एवं आगे खड़ी हैं। ये तीनों सूर्य की पत्नियाँ निक्षुभा, सुरेणु एवं संज्ञा हैं। सूर्य के दोनों हाथ ऊपर की ओर उठे हुए हैं जिनमें खिले हुए कमल के डंठल पकड़े हुए दिख रहे हैं। मूर्ति के ऊपर शिला पीठिका के शीर्ष पर कीर्तिमुख तथा दोनों तरफ उड़ते हुए गंधर्व दिख रहे हैं। सूर्य के दोनों ओर शिला पीठिका पर गजव्याल दिख रहे हैं। सिर पर प्रकाश की लपटें दिख रही हैं तो उसके ऊपर लंबा टोप पहने हुए हैं। कानों में कुंडल, बाएँ कंधे पर यज्ञोपवीत, गले में हार, बाँह में भुजबंध, कमर में कटिबंध तथा धोती पहने हुए सूर्य की प्रतिमा काले पत्थर पर पूर्ण रूप से अलंकृत है। मूर्ति के पीछे शिला पीठिका में कटाव है तो ऊपर में नुकीला उभार है जो स्पष्ट करता है कि यह प्रतिमा कर्णाटकाल में बनी थी जिस पर पाल कला का भी कुछ प्रभाव था। इसी पोखरे से एक अत्यंत ही अलंकृत विष्णु की प्रतिमा तथा एक लाल बलुआ पत्थर से निर्मित तारा की दुर्लभ प्रतिमा, जिसके पादपीठिका पर अभिलेख खुदे हैं, मिली है। ये सभी प्रतिमाएँ ठाढ़ी गाँव के दुर्गा स्थान में स्थित राधाकृष्ण मंदिर में रखी हुई हैं (मिश्र 2015: 3–4)।

सरखड़ा पोखरा के पास कमलादित्य स्थान में भी अनेक भग्न प्रतिमाएँ हैं। एक विष्णु की भग्न प्रतिमा के पाद पृष्ठ पर अभिलेख है तो बगल में ही एक सूर्य की भग्न प्रतिमा है। इस प्रतिमा की लंबाई 2 इंच, चौड़ाई 1 इंच 7 सें०मी० तथा मोटाई 10 सें०मी० है। इसमें सात घोड़े तथा सारथी अरुण को छोड़कर बाकी की पहचान अस्पष्ट है (मिश्र 2015: 3–4; मिश्र 1998: 152)।

सहरसा जिला के सत्तरकटैया प्रखंड के अंतर्गत पटोरी गाँव में एक अत्यंत ही सुंदर सूर्य की प्रतिमा मिली (चित्र 2)। पटोरी पंचायत के पश्चिम मुसहरी टोला के कलर सदा को खेत में मिट्टी काटने के दौरान यह प्रतिमा मिली थी। तीन फीट लंबी तथा दो फीट चौड़ी यह प्रतिमा अत्यंत ही सामान्य अलंकरण की है। सूर्य की पूर्वोक्त प्रतिमा की तरह ही इसमें अश्व, अरुण, उषा–प्रत्यूषा के अलावा सूर्य की तीनों पत्नियाँ हैं। इसकी शिला पीठिका अत्यंत ही सामान्य एवं अलंकरण विहीन है। सूर्य के सिर के दोनों ओर शिलापीठिका पर उड़ता गंधर्व है लेकिन शीर्ष पर कीर्तिमुख के स्थान पर पुष्प का चित्र दिखता है। शिलापीठिका वैसे तो अलंकरण विहीन तथा चिकना है लेकिन किनारे से एक रेखा खींची गई है। पिछले ही वर्ष सितम्बर 2015 में मधुबनी जिले के बाबूबरही प्रखंड के अंतर्गत कुलहरिया गाँव से एक उमा महेश्वर की प्रतिमा मिली है (मिश्र 1998: 219) जिसकी शिला पीठिका भी ऐसा ही अलंकरणविहीन एवं चिकना है। प्रतिमा के ऊपर शिलापीठिका के शीर्ष पर वैसा ही फूल दिख रहा है तथा दोनों तरफ उड़ते हुए गंधर्व का चित्रण किया गया है। इस तरह दोनों प्रतिमा देखने से ऐसा लगता है कि एक ही व्यक्ति द्वारा यह बनाया गया हो। लेकिन दोनों स्थलों की दूरी करीब 100 कि०मी० है।

इसी तरह की प्रतिमा मधुबनी जिला के बनकट्टा गाँव के एक पुरानी तालाब में मिट्टी कटाई के क्रम में दिसम्बर 2013 में मिली है (मिश्र 1998: 16–17)। यहाँ से दो सूर्य एवं एक विष्णु की खंडित प्रतिमा मिली है। सूर्य की दो प्रतिमाओं में से एक पूर्ण अलंकृत है जैसा कि अंधराठाढ़ी की सूर्य प्रतिमा में है लेकिन अंतर केवल यह है कि इसके शिलापीठिका के शीर्ष पर कीर्तिमुख के स्थान पर पुष्प बना हुआ है एवं शिलापीठिका का ऊपरी भाग नुकीला न होकर गोलाकार जैसा है। वहीं दूसरी प्रतिमा सहरसा के पटोरी की सूर्य प्रतिमा की तरह अलंकरण विहीन तथा चिकनी है एवं शिलापीठिका के शीर्ष पर पुष्प बना हुआ है तथा ऊपरी भाग नुकीले के स्थान पर गोलाकार है। शिलापीठिका के किनारे रेखा बनाकर घेराबंदी की गई है। प्रतिमा की लंबाई 76 सें०मी० तथा चौड़ाई 40 सें०मी० है जबकि शिलापीठिका से मूर्ति का उभार 8 सें०मी० है।

लहेरियासराय से 2 कि०मी० पूरब बहादुरपुर प्रखंड के रघेपुरा बस्ती से जो सूर्य की प्रतिमा 1998 ईसवी में मिली थी (कुमार 2016: 121) उसका भी अलंकरण सामान्य है तथा

Scanned by CamScanner

शिलापीठिका सादा है। गजब्याल नहीं दिखता। प्रभावली के ऊपर उड़ता हुआ गंधर्व दिखता है। शिलापीठिका का शीर्ष गोलाकार है तथा शीर्ष पर कीर्तिमुख अथवा पुष्प कुछ नहीं दिखता। लेकिन पटोरी की प्रतिमा से थोड़ा–सा अधिक इसमें अलंकरण है। प्रतिमा दसवीं शताब्दी की है तथा इसकी लंबाई 132 सें०मी० तथा चौड़ाई 70 सें०मी० है। प्रतिमा नाक पर आंशिक रूप से खंडित है। इसी तरह की सादगीपूर्ण प्रतिमा मधुबनी जिले के बिस्फी प्रखंड के अंतर्गत रथौंस गाँव से विष्णु की मिली है (कुमार 2016: 121)। इस प्रतिमा की शिलापीठिका के शीर्ष पर पुष्प है तथा किनारे पर मोटी रेखा से घेराबंदी की गई है। सादगीपूर्ण तथा अलंकरणविहीन यह प्रतिमा दसवीं शताब्दी की है।

12 मार्च, 2016 को मधुबनी जिला के पूर्वी सकरी पंचायत के अंतर्गत बलिया गाँव के भैरव बाबा मंदिर के पीछे स्थित तालाब से जेसीबी मशीन से मिट्टी कटाई के क्रम में सूर्य की एक भग्न प्रतिमा मिली है जो पूर्णतः अलंकृत है। शिलापीठिका का ऊपरी भाग भग्न है तथा प्रतिमा के पीछे कटाव है। प्रतिमा के दोनों हाथ केहुनी से नीचे भग्न हैं इसलिए बाँह का बाजूबंद स्पष्ट दिखता है। कटिबंध, गले का हार, कान में कुंडल, बाएँ कंधे पर यज्ञोपवीत आदि अत्यंत ही सुंदर एवं सुस्पष्ट हैं। प्रतिमा के दोनों पाँव के बीच में अवस्थित पत्नी तथा बाईं ओर खड़ी दूसरी पत्नी की प्रतिमा भग्न है। दोनों हाथ के साथ–साथ दोनों कमल भी भग्न हैं। लंबाई तीन फीट तथा चौड़ाई 2 फीट है। इसी बीच दरभंगा जिले के बेनीपुर प्रखंड के अंतर्गत रोहार महमुदा गाँव से सूर्य की एक खंडित प्रतिमा मिली है। प्रतिमा वक्षस्थल से ही खंडित है तथा शिलापीठिका भी दो टुकड़े में बंटी हुई है लेकिन उसे जोड़कर खड़ा किया गया है। बायाँ हाथ खंडित है। दाहिने कंधे से ऊपर शिलापीठिका भग्न है। इस मूर्ति का टोप अन्य प्रतिमाओं के टोप से अलग दिखता है। 11 फरवरी, 1983 ईसवी को घोघरडीहा (मधुबनी) प्रखंड के परसा गाँव में मिट्टी खुदाई के क्रम में सूर्य की प्रतिमा मिली थी (झा 2001: 257)। यह तेरहवीं शताब्दी की है तथा इसकी लंबाई 48 सें०मी० तथा चौड़ाई 24 सें०मी० है। यह प्रतिमा अत्यंत ही अलंकृत है। शिलापीठिका के शीर्ष पर कीर्तिमुख है। आभूषण, यज्ञोपवीत, उड़ते हुए गंधर्व, गजब्याल, शिलापीठिका का कटाव आदि पूरा अलंकरण अंधराठाढ़ी की सूर्य प्रतिमा की तरह ही है।

बाबूबरही (जिला मधुबनी) प्रखंड के अंतर्गत बरुआर गाँव में अत्यंत ही सुंदर द्वादश सूर्य की प्रतिमा है (चित्र 3)। मिथिला में द्वादश आदित्य की उपासना प्राचीन काल से होती रही है। *शतपथ ब्राह्मण* में एक स्थान पर आठ तथा दूसरे स्थान पर द्वादश आदित्यों का उल्लेख मिलता है (शतपथ ब्राह्मण 6/1/2/6; 11/6/3/8)। *ऐतरेय ब्राह्मण* में भी द्वादशादित्य का उल्लेख मिलता है (ऐतरेय ब्राह्मण 2/4)। शास्त्रों में वर्णित द्वादशादित्य का चित्रण केवल बरुआर में ही देखने को मिलता है। बिहार के अन्य भागों से प्राप्त अथवा किसी संग्रहालय में अभी तक द्वादश आदित्य की आकृति और कहीं नहीं देखने को मिली है।

इस प्रतिमा की लंबाई 185 सें०मी० तथा चौड़ाई 90 सें०मी० है। विशाल शिलापीठिका के किनारे–किनारे ग्यारह सूर्य की प्रतिमा बनी हुई हैं जबकि बारहवीं मध्य में है। यह मिथिला की विशालतम प्रतिमा है जिसके पृष्ठभाग में अभिलेख भी है। मुख्य प्रतिमा के बाएँ तथा दाहिनी ओर चार–चार छोटे–छोटे सूर्य बने हुए हैं तो शीर्ष पर एक तथा उसके नीचे दोनों ओर फिर एक–एक बने हैं। मुख्य प्रतिमा के सिर के ऊपर शिलापीठिका पर प्रकाश की लपटें अग्नि की लपटों की तरह दिख रही हैं। सूर्य के दोनों हाथ भग्न हैं कान में कुंडल, गले में हार एवं बाजूबंद अत्याधिक मोटा दिख रहा है। कटिबंध भी ज्यादा मोटा दिख रहा है। कमर में धोती पहने हुए हैं तथा बाईं ओर तलवार लटक रही है। शिलापीठिका में प्रतिमा के पीछे कटाव है तथा शीर्ष पर नुकीला बना हुआ है। सारथी अरुण, उषा–प्रत्यूषा, पत्नियाँ, सात अश्व जुते हुए रथ आदि अन्य सूर्य प्रतिमाओं की तरह ही हैं। मंदिर ऊँचे टीले पर बने हुए हैं। यह बाढ़ क्षेत्र था जिसके भय से ऊँचे स्थान पर मंदिर बनवाया गया

Scanned by CamScanner

होगा। मंदिर से पश्चिम आधा कि०मी० की दूरी पर सोनी नदी बहती है। मंदिर से उत्तर दो एकड़ का टीला है जो अभी कृषि कार्य में उपयोग हो रहा है। बस्ती भी टीले पर ही है। स्थानीय लोगों का कहना है कि सुगौना की महारानी के प्रयास से रजोखर तालाब से निकलवाकर इस प्रतिमा को यहाँ मंदिर में स्थापित किया गया था। सुगौना ओइनवार वंशीय राजाओं की राजधानी थी जिसमें अनेक महारानी यथा– लखिमा देवी, विश्वास देवी, धीरमति आदि का मिथिला पर शासन करने का उल्लेख मिलता है (मिश्र 2000: 102)। उन्हीं में से किसी के द्वारा यह काम कराया गया होगा। कहा जाता है कि उक्त महारानी द्वारा सुगौना से बरुआर तक सड़क बनवाया गया था।

यहाँ के टीलों पर खेती के लिए मिट्टी काटने के क्रम में अनेक प्रकार के पुरावशेष यथा– पत्थर की गुड़ी, मिट्टी के बड़े बर्तन में कौड़ियाँ, पत्थर का शिला आदि के अलावा बड़ी संख्या में बर्तन के टुकड़े मिलते हैं जिससे यहाँ प्राचीन काल में बस्ती होने का प्रमाण मिलता है। प्रतिमा देखने से बारहवीं–तेरहवीं शताब्दी अर्थात् कर्णाटकालीन प्रतीत होती है।

बरुआर में सूर्य के साथ–साथ नृत्यरत गणेश की भी प्रतिमा मिलती है। मिथिला के लोग पंचदेवोपासक रहे हैं इसलिए पंचदेवता की प्रतिमा अक्सर मिलती रही है लेकिन अधिकतर स्थानों से पंचदेवता में से केवल सूर्य एवं गणेश की प्रतिमा मिली है। यहाँ भी वही दोनों प्रतिमा मिली हैं।

कुछ वर्ष पहले पुरातत्त्व निदेशालय के पूर्व संरक्षण पदाधिकारी सत्येन्द्र कुमार झा के साथ कुछ स्थलों यथा– भोज पंडौल (प्रखंड विस्फी, जिला– मधुबनी), नाहर भगवतीपुर (प्रखंड राजनगर, जिला– मधुबनी), हावीडीह (प्रखंड– बहेड़ी, जिला– दरभंगा) आदि अनेक स्थलों का भ्रमण करने का मौका मिला था इनमें उपरोक्त तीनों स्थल पर सूर्य के साथ–साथ गणेश की प्रतिमा भी देखने को मिली। इसके अलावा देवकुली (जिला– दरभंगा), गोढ़ैल, घनश्यामपुर, सिमरांवगढ़ (नेपाल), भीट भगवानपुर (जिला– मधुबनी), वीरपुर (बेगूसराय), चेचर तथा पोझियम (वैशाली) आदि स्थलों में भी दोनों की प्रतिमा मिल रही हैं। देवहार (मधुबनी) के मुक्तेश्वर स्थान (मिश्र 2006: 107–112) में गणेश, दुर्गा, विष्णु आदि की प्रतिमा मिली हैं लेकिन अभी तक केवल सूर्य की प्रतिमा नहीं मिल सकी है लेकिन यहाँ समय–समय मिट्टी कटाई के क्रम में प्रतिमाएँ मिलती रही हैं, हो सकता है कि बाद में मिले।

दरभंगा–रहिका पथ पर अवस्थित बसौली से चार कि०मी० पश्चिम भोज पंडौल का भगवती स्थान है जहाँ 1960 ईसवी में एक पीपल के पेड़ की जड़ से सूर्य की प्रतिमा मिली थी जिसकी लंबाई 130 सें०मी० तथा चौड़ाई 25 सें०मी० है। इसका समय दसवी–ग्यारहवीं शताब्दी है। प्रतिमा भग्न है। दोनों हाथ, जिनमें कमल हैं, सुरक्षित हैं लेकिन दोनों पांव खंडित हैं। उषा–प्रत्यूषा, निक्षुभा–संज्ञा, अरुण आदि सभी स्पष्ट रूप से दिख रहे हैं। इसी तरह भगवतीपुर बाजार (जिला– मधुबनी) में सूर्य की दो भग्न प्रतिमा हैं। एक प्रतिमा, जिसकी लंबाई 135 सें०मी० तथा चौड़ाई 72 सें०मी० है, काफी भग्न है। यह दसवीं शताब्दी की है तथा इस पर सामान्य अलंकरण है। शिलापीठिका का शीर्ष भाग तथा बाएँ हाथ का कमल आदि खंडित हैं। नीचे के भाग पर अरुण, उषा–प्रत्यूषा, दंड–पिंगल, निक्षुभा–संज्ञा आदि सभी की आकृति सुरक्षित दिख रही हैं। दूसरी प्रतिमा तेरहवीं शताब्दी की है जिसकी लंबाई 147 सें०मी० तथा चौड़ाई 78 सें०मी० है। शिलापीठिका पर पूर्ण अलंकरण है तथा शीर्ष पर कीर्तिमुख है। दोनों हाथ खंडित हैं। दंड एवं पिंगल की आकृति निक्षुभा एवं राज्ञी से बहुत बड़ी है। जबकि पहली प्रतिमा में सभी की आकृति समान थी। शिलापीठिका में मूर्ति के पीछे कटाव है। यहाँ से एक कि०मी० उत्तर भुवनेश्वर स्थान में भी सूर्य की भग्न प्रतिमा मिली है। इसका समय आठवीं–नौवीं शताब्दी है। इसकी लंबाई 70 सें०मी० एवं चौड़ाई 33 सें०मी० है। कान में कुंडल एवं गले में हार छोड़कर कोई भी आभूषण नहीं दिखता क्योंकि दोनों बाँह तथा वक्ष से नीचे खंडित है। एक दूसरी शिलापीठिका का आधार भी यहाँ रखा हुआ है जो संभवतः इसी खंडित सूर्य का आधार है। एक दूसरी भग्न सूर्य प्रतिमा की लंबाई 34

Scanned by CamScanner

सेंoमीo और चौड़ाई 40 सेंoमीo है। इसके केवल ऊपर का भाग ही सुरक्षित है।

दरभंगा जिले के बहेड़ी प्रखंड के अंतर्गत हावीडीह के दुर्गा मंदिर में सूर्य की प्रतिमा की लंबाई 106 सेंoमीo तथा चौड़ाई 37 सेंoमीo है। यह प्रतिमा भग्न है तथा अभिलेख युक्त दुर्गा की प्रतिमा के बगल में रखी हुई है। एक दूसरा स्थान, जो लक्ष्मी नारायण स्थान है, में भी एक सूर्य की प्रतिमा है जिसका मुख एवं हाथ खंडित है इसकी लंबाई 79 सेंoमीo तथा चौड़ाई 42 सेंoमीo है। दोनों मंदिर में सूर्य के साथ–साथ गणेश भी हैं। दिनांक 26 जून, 2018 को इस गाँव के एक पोखर से एक सूर्य प्रतिमा (110 × 55 सेंoमीo) मिली है।

राजनगर के राजपरिवार स्थित दुर्गा मंदिर में पश्चिमी कोने वाले कमरे में एक सूर्य की प्रतिमा दिखी जिसमें शीर्ष पर कीर्तिमुख तथा अन्य पूर्ववत् है। अलंकरण पूर्ण है। बेगूसराय के वीरपुर से सूर्य के साथ–साथ नृत्यरत गणेश, रेवन्त, पिंगल, अभिलेखयुक्त उमा–महेश्वर, चामुंडा तथा बुद्ध की प्रतिमा मिली है (जीo डीo कॉलेज बुलेटिन नंo 2: 18) जो सर्वधर्म समन्वय का प्रमाण है। इसी तरह मधुबनी जिले के मधेपुर प्रखंड के अंतर्गत भीट–भगवानपुर में सूर्य के अलावा गणेश, उमा–महेश्वर, विष्णु, चतुर्मुख शिव लिंग, द्वार स्तंभ आदि मिले हैं। यहाँ कर्णाटवंशी राजा मल्लदेव के अभिलेख भी मिले हैं।

किशनगंज के कोचाधामन थानांतर्गत बरीजान गढ़ से एक सूर्य की प्रतिमा 1962 ईसवी में मिली थी। इसका वजन 70 किoग्राo है। दरभंगा जिले के मनीगाछी प्रखंड के अंतर्गत जगदीशपुर गाँव में एक सूर्य की प्रतिमा मिली है (झा 2001: 257)। तिलकेश्वर स्थान (दरभंगा) से नौवीं–दसवीं शताब्दी की एक सूर्य की दुर्लभ प्रतिमा मिली है जो चंद्रधारी संग्रहालय में रखी हुई है। इस प्रतिमा में छः भुजाएँ हैं जिनमें से एक बाईं की नीचे वाली खंडित है। ऐसा लगता है कि इस प्रतिमा में विष्णु एवं सूर्य की समन्वित आकृति को दिखाने का प्रयास किया गया है। ऊपर के दोनों हाथ में कमल का डंठल है। बाएँ हाथ में दंड है तो तीसरा भग्न है। दाहिनी में से एक में चक्र तो दूसरे में चामर जैसा दिख रहा है (चित्र 4)। शिलापीठिका में ज्यादा कटाव है तथा अलंकरणहीन है। शीर्ष नुकीला है। प्रतिमा में बनमाला घुटने के नीचे तक लटक रही है जैसा कि विष्णु की प्रतिमा में देखा जाता है। सभी भुजाओं में भुजबंद, गले में मोटे हार, कंधे पर यज्ञोपवीत, कटिबंध तथा धोती की आकृति अत्यंत ही मनोहर है। जैसा कि *ऋग्वेद* (3/62/10) में विष्णु को आकाश में विचरण करने वाला सूर्य कहा गया है। लगता है उसी को ध्यान में रखते हुए सूर्य एवं विष्णु की एकीकृत आकृति को भी कभी–कभी दिखाने का प्रयास किया जाता है। जलज कुमार तिवारी (भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण) के अनुसार इस प्रतिमा में हरि–हर एवं सूर्य तीनों की ही समन्वित आकृति दिखाई गई है। उन्होंने इस प्रतिमा को हरिहरार्क कहा है। इस तरह अपनी तरह की यह अनूठी प्रतिमा है। तिलकेश्वर में वराह की प्रतिमा अभिलेखयुक्त मिली है। यह अभिलेख कर्णाटवंशी राजा के एक मंत्री कर्म्मादित्य का है (चौधरी 1958)।

भीट–भगवानपुर में ग्यारहवीं शताब्दी की जो प्रतिमा है उसकी लंबाई 120 सेंoमीo तथा चौड़ाई 55 सेंoमीo है (मिश्र 1978: 35–39; कुमार 2016: 121)। शिलापीठिका गोलाकार कोणीय है तथा शीर्ष पर कीर्तिमुख दिख रहा है। शिलापीठिका पर अलंकरण है तथा प्रतिमा के पीछे कटाव है। दंड, पिंगल, उषा–प्रत्यूक्षा, सारथी अरुण सभी स्पष्ट रूप से दिख रहे हैं।

अंधराठाढ़ी प्रखंड (जिला– मधुबनी) के रखवारी गाँव में एक सूर्य प्रतिमा है जो आग लगने से जल गई है। अब जली हुई पत्थर परत–दर परत झड़ रही है। अभी इसकी लंबाई 110 सेंoमीo तथा चौड़ाई 60 सेंoमीo बची है। जलने के बाद सूर्य के हाथ, दंड–पिंगल, गंधर्व सहित शिलापीठिका का बायाँ भाग तथा उषा–प्रत्यूषा के अलावे अन्य भाग एवं शिलापीठिका से धीरे–धीरे अलग होते जा रहे हैं। गत 22

Scanned by CamScanner

मई, 2016 को एक आँगन में जली हुई सूर्य प्रतिमा के अलावा, विष्णु, विष्णु का शंखयुक्त बायाँ हाथ एवं सरस्वती, लक्ष्मी आदि की अनेक प्रतिमाएँ अलग–अलग खंडित एवं जली हुई अवस्था में देखने को मिलीं। जलने के बाद भी सूर्य के गले का हार, कटिबंध, धोती, टोप, कान में कुंडल आदि अभी तक दिख रहे हैं। ठेहुने से नीचे खंडित हो गया है।

नेपाल के सिमरांव गढ़ से प्राप्त सूर्य की प्रतिमा, जिनके पादपृष्ठ पर मिथिलाक्षर में अभिलेख हैं, काठमांडू के राष्ट्रीय संग्रहालय में संगृहीत है (मौन 2006: 78)। बेगूसराय जिले के बरौनी प्रखंड के अंतर्गत सौगराहा गाँव से सूर्य की प्रतिमा मिली थी जो जी०डी० कॉलेज बेगूसराय के संग्रहालय में रखी हुई है।

सबसे प्रसिद्ध सूर्य मंदिर कंदाहा का है जो सहरसा जिला मुख्यालय से 14 कि०मी० पश्चिम में है। बनगाँव–महिषी पथ के गोरहो चौक से 3 कि०मी० उत्तर यह मंदिर है जिसके द्वार के प्रस्तर निर्मित स्तंभ के दो प्रस्तर खंडों पर ओइनवार नरेश नरसिंहदेव का अभिलेख उत्कीर्ण है। इस अभिलेख में हरिसिंहदेव और उनके पुत्र नरसिंहदेव की विरुदावली अंकित है (चौधरी 1965: 485)। सूर्य की प्रतिमा खंडित हैं बायां हाथ एवं कमल खंडित है। अश्व दिख रहे हैं लेकिन सारथी एवं अन्य आकृति भग्न है। गले में हार, यज्ञोपवीत, कांन में कुंडल आदि दिख रहे हैं। शिलापीठिका पर अलंकरण सामान्य है।

मधुबनी जिले के बेनीपट्टी प्रखंड के अंतर्गत देवपुरा (देपुरा) गाँव में सूर्य की प्रतिमा मिली है (झा 2014: 124)। यहाँ से दुर्गा तथा कार्तिकेय की पाल प्रतिमा भी मिली है। इधर मिथिला की दक्षिणी सीमा गंगा नदी की दूसरे किनारे पर बाढ़ जिला के शहरी गाँव में सूर्य की एक भग्न प्रतिमा मिली है उसका भी स्वरूप ठीक वैसा ही है जैसा गंगा के उत्तरी भाग में मिलता है।

सुपौल जिला के जगतपुर बरुआरी गाँव से एक सूर्य की प्रतिमा मिली थी। सूर्य के अलावा यहाँ से वराह, यक्ष आदि की भी प्रतिमा मिली। ये सभी प्रतिमाएँ कर्णाटकालीन प्रतीत होती हैं (सिंह 2003: 34–35)। मधेपुरा जिला के धैलाढ़ प्रखंड की श्रीनगर नामक बस्ती से भी खेत जुताई के क्रम में बलभद्र नारायण सिंह को एक सूर्य की प्रतिमा मिली थी (सिन्हा 1969: 81)। कलात्मक दृष्टि से यह भी कर्णाटकालीन ही प्रतीत होती है। पूर्वी चंपारण जिला के चकिया प्रखंड के अंतर्गत मुजफ्फरपुर–मोतिहारी पथ पर पिपरा चौक के निकट सीताकुंड नामक स्थल से कर्णाटकालीन सूर्य की प्रतिमा मिली है (चक्रवर्ती एवं अन्य 1996: 157)। वैशाली जिले के चेचर के एक मंदिर में भी एक सूर्य की प्रतिमा है जो उपरोक्त प्रतिमाओं से ज्यादा पुरानी अर्थात् गुप्तोत्तर काल की है (चौधरी 2016: 27)। इसी काल की यहाँ गणेश की भी प्रतिमा है। सूर्य की इस प्रतिमा में केवल दो ही सहचर दिख रहे हैं संभवतः दंड एवं पिंगल हैं। उनकी पत्नियाँ तथा उषा–प्रत्यूषा इसमें दिख नहीं रही हैं जैसा कि बाद की प्रतिमाओं में दिखती हैं। इसी जिले के लालगंज प्रखंड के अंतर्गत पोझियाम गाँव के एक मंदिर में सूर्य, जिसकी लंबाई 65 सें०मी०, चौड़ाई 65 सें०मी० तथा मोटाई 30 सें०मी० है तथा गणेश की प्रतिमा मिली है। ये प्रतिमाएँ मध्यकालीन हैं इसीलिए इनकी आकृति भी अलग है (चौधरी 2016: 103–104)। इसमें सूर्य अश्व जुते हुए रथ पर बैठे हुए हैं तथा इसमें सूर्य के एक भी सहचर का अंकन नहीं है। इस प्रतिमा में सूर्य चतुर्भुज हैं। दो हाथ में कमल तथा बाकी दोनों हाथ पालथी मारकर बैठे हुए सूर्य अपने ठेहुने पर रखे हुए हैं। इस तरह यह प्रतिमा अलग प्रकार की है। इनके अतिरिक्त दरभंगा जिला के घनश्यामपुर (चित्र 5), अरई, डीलाही, लालगंज (केवटी थाना), गंगेश्वर स्थान, नदियामी, मधुबनी जिला के सिपहिगिरी आदि से भी सूर्य की प्रतिमाएँ प्राप्त हुई हैं।

इस तरह अब तक प्राप्त सूर्य प्रतिमाओं से स्पष्ट होता है कि मिथिला में प्राचीनकाल से ही सूर्य की आराधना होती रही है। सत्येन्द्र कुमार झा (2001: 257–258) का यह कहना कि

Scanned by CamScanner

इस क्षेत्र में सूर्यपूजा देर से अर्थात् दसवीं शताब्दी के बाद से शुरू हुई है, असंगत लगता है क्योंकि साहित्यिक साक्ष्यों के अलावा पुरातात्त्विक साक्ष्य ईसा पूर्व पहली शताब्दी तक के मिल रहे हैं और जैसा हम देख रहे हैं कि मिट्टी की कटाई के क्रम में अत्यंत ही तीव्र गति से दुर्लभ प्रतिमाएँ मिल रही हैं जो मिथिला की इतिहास, संस्कृति एवं परंपरा की पुरानी अवधारणाओं को परिवर्तित करने के लिए बाध्य कर रही हैं। पुरातात्त्विक दृष्टि से गहन अन्वेषण, सर्वेक्षण तथा उत्खनन की परम आवश्यकता है। वैसे परंपरागत दृष्टि से मिथिला में सूर्य उपासना का सबसे ज्यादा महत्व है। प्रत्येक व्यक्ति सूर्योदय काल में सूर्य को प्रणाम करने के अलावा स्नान के समय सूर्य की आराधना जल देकर तो करते ही हैं साथ ही संध्यावंदन की परंपरा भी सूर्योपासना ही है। किसी भी पूजा के आरंभ में दिन के समय सर्वप्रथम सूर्यादि पंचदेवता की पूजा करते हैं तो शाम में गणपत्यादि पंचदेवता की। यही कारण है कि अनेक स्थलों पर सूर्य एवं गणेश दोनों की प्रतिमा साथ–साथ मिल रही हैं। जहाँ नहीं मिली है वहाँ भी भविष्य में मिलने की संभावना है।

संदर्भ सूची

एनुअल रिपोर्टः आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया, 1935–36।

कुमार, सुशांत, 2016, *दरभंगा प्रक्षेत्र के पाषाण प्रतिमाएँ*, वाराणसीः कला प्रकाशन।

कीथ, ए० बी० (संपा०), 1909, *ऐतरेय ब्राह्मण*, ऑक्सफोर्डः क्लेरेंडन प्रेस।

कॉवेल, ई० बी० (संपा०), 1862, *कौषीतकि ब्राह्मण*, कलकत्ता।

चक्रवर्ती, डी० के०, अजीत कुमार प्रसाद, एस० के० झा एवं ए० सी० वर्मा, 1996, फ्रॉम पूर्णिया टू चंपारण द डिस्ट्रीब्यूशन ऑफ साइट्स इन द नॉर्थ बिहार प्लेन्स, *साउथ एशियन स्टडीज* 12।

चौधरी, पी० सी० राय, 1965, *बिहार डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, सहरसा*, पटनाः सेक्रेटेरिएट प्रेस।

चौधरी, बिजॉय कुमार, 2016, *आर्कियोलॉजिकल गजेटियर ऑफ वैशाली डिस्ट्रिक्ट*, पटनाः काशी प्रसाद जायसवाल शोध संस्थान।

चौधरी, राधाकृष्ण, 1958, *सेलेक्ट इन्स्क्रिप्शंस ऑफ बिहार*, सहरसाः शांति देवी प्रेस।

जी० डी० कॉलेज बुलेटिन नं० 2, बेगूसराय

झा, इन्द्रनारायण, 2014, *मिथिला अन्वेषण एवं दिग्दर्शन*, मधुबनीः हरि–अन्नपुर्णा स्मृति प्रकाशन।

झा, बी० एवं अनिल कुमार चौधरी, 2006, सन वर्सिप इन द आर्ट ऑफ मिथिला, *आर्ट एंड आर्कियोलॉजी ऑफ मिथिला*, पटनाः पुरातत्त्व निदेशालय।

झा, सत्येन्द्र कुमार, 2001, मिथिला की पाल प्रतिमाएँ, विश्वम्भर झा, समरेन्द्र नारायण आर्य एवं जयदेव मिश्र (संपा०) *मिथिलाः संस्कृति एवं परंपरा*, पटनाः जानकी प्रकाशन।

मिश्र, विजयकांत, 1978, *मिथिलाः आर्ट एंड आर्किटेक्चर*, इलाहाबादः मिथिला प्रकाशन।

मिश्र, शिव कुमार, 1998, *एजुकेशन आइडियाज एंड इंस्टिट्यूशन्स इन एन्सिएंट इंडिया*, नई दिल्लीः भारतीय विद्या भवन।

मिश्र, शिवकुमार, 2000, वुमन स्कॉलर्स इन मेडिएवल मिथिला, सी० एम० अग्रवाल (संपा०) *नारीः फैसेट्स ऑफ इंडियन वुमनहुड*, जिल्द 1, दिल्लीः इंडियन पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स।

मिश्र, शिवकुमार 2006, मुक्तेश्वर स्थानः मिथक, कला एवं पुरावशेष, *आर्ट एंड आर्कियोलॉजी ऑफ मिथिला*, पटनाः पुरातत्त्व निदेशालय।

मिश्र, शिव कुमार, 2015, अंधराठाढीक पुरावशेष, *मिथिला भारती* 2।

मैक्समूलर, एफ० (संपा०), 1890–92, *ऋग्वेद, सायण भाष्य सहित*, लंदनः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटि प्रेस।

मौन, प्रफुल्ल कुमार सिंह, 2006, कर्णाटकालीन मूर्त्तिकला, *आर्ट एंड आर्कियोलॉजी ऑफ मिथिला*, पटनाः पुरातत्त्व निदेशालय।

रौथ, आर० एवं डब्ल्यू० डी० ह्विट्ने, 1856, *अथर्ववेद संहिता*, बर्लिनः एफ० डम्मलर।

शतपथ ब्राह्मण, अच्युतग्रंथमाला कार्यालय, वाराणसी, संवत् 1994–97।

सिंह, अशोक कुमार, 2003, सुपौल जिला के पुरातात्त्विक स्थल, *कोशी क्षेत्र का सांस्कृतिक एवं पुरातात्त्विक महत्त्व*, पटनाः पुरातत्त्व निदेशालय।

सिन्हा, चित्तरंजन प्रसाद, 1969, सहरसा से पटना संग्राहलय के प्राप्त चारि गोट दुर्लभ मुर्ति, *मिथिला भारती* 1(1–2)।

Scanned by CamScanner



मिश्र, चित्र 1: सूर्य प्रतिमा, अंधराठाढ़ी, मधुबनी, 11वीं–12वीं शताब्दी ईसवी



मिश्र, चित्र 2: सूर्य प्रतिमा, सत्तरकटैया, सहरसा



मिश्र, चित्र 3: द्वादशादित्य की प्रतिमा, बरुआर, मधुबनी, 12वीं–13वीं शताब्दी ईसवी



मिश्र, चित्र 4: हरिहरार्क की प्रतिमा, तिलकेश्वरस्थान (चंद्रधारी संग्रहालय, दरभंगा में संगृहीत), 9वीं–10वीं शताब्दी ईसवी



मिश्र, चित्र 5: सूर्य की प्रतिमा, घनश्यामपुर, दरभंगा, 11वीं–13वीं शताब्दी ईसवी

Scanned by CamScanner